यूक्रेनी लोक कथा

टेलीसिक - छोटी छड़ी

चित्र: एल. गेलेम्बोव्स्का, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

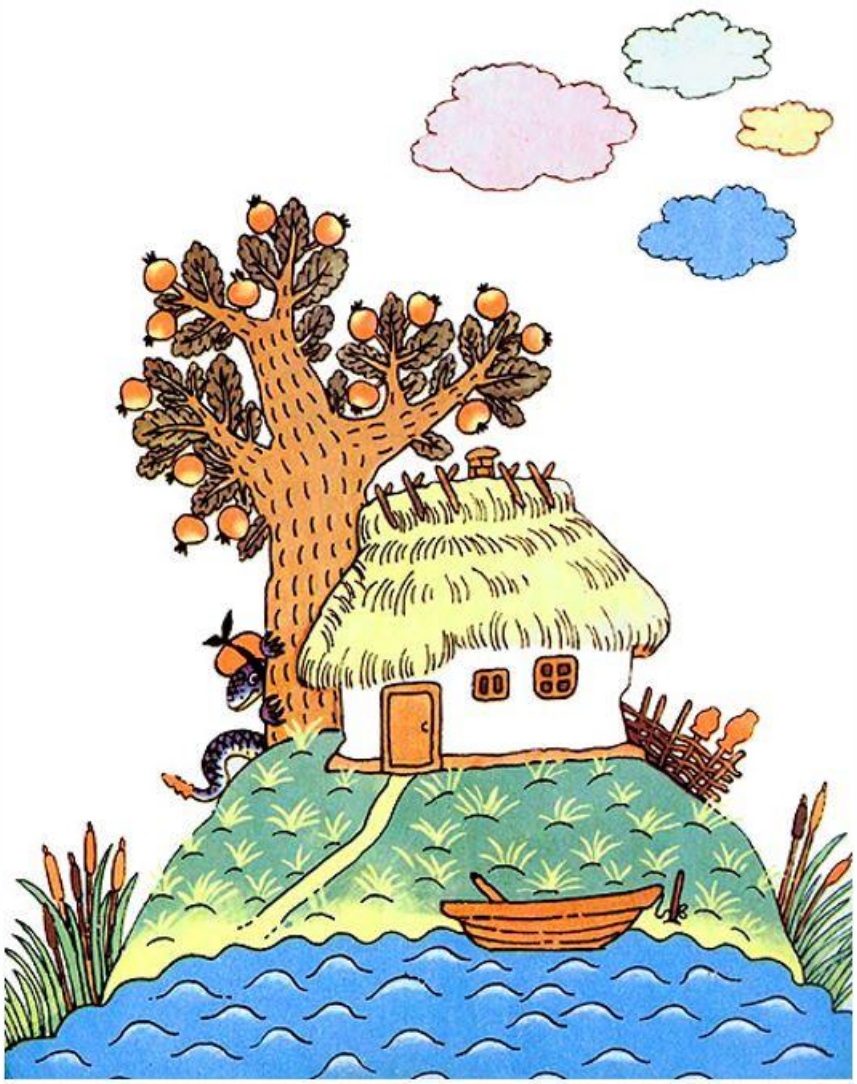

एक समय की बात है, एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत रहते थे. उनके कोई संतान नहीं थी और बुढ़ापे में उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था, और इससे वे सच में बड़े दुखी थे.

एक दिन बुढ़िया ने बूढ़े से कहा:

"बूढ़े आदमी तुम जंगल में जाओ, और एक पेड़ काटो. उससे हम एक छोटा सा पालना बनाएंगे. मैं पालने में लकड़ी की एक छड़ी रखूंगी, और मैं उसे झुलाऊंगी और उससे अपना दिल बहलाऊँगी."

बूढ़ा आदमी पहले तो तैयार नहीं हुआ लेकिन बुढ़िया द्वारा बार-बार विनती करने के बाद अंत में उसने वैसा ही किया जैसा उसकी पत्नी ने कहा था. वो जंगल में गया, उसने एक पेड़ काटा और उससे एक पालना बनाया. फिर बुढ़िया ने पालने में लकड़ी की एक छड़ी रखी और उसे हिलाना शुरू कर दिया, और गाया:

"छोटी छड़ी, आराम से सो जाओ,
और मैं तुम्हारे लिए कुछ दलिया पकाऊंगी,
बस उतना जो तुम्हारे खाने के लिए पर्याप्त होगा
और वो तुम्हारे शरीर को स्वस्थ बनाएगा."

फिर बूढ़ी औरत तब तक पालने को झुलाती रही जब तक सांझ न हो गई और सोने का समय न हो गया.

अगली सुबह, जब बूढ़ा आदमी और बूढ़ी औरत उठे, तो उन्होंने पालने में झांककर देखा, और गज़ब - लकड़ी की छड़ी के बजाए, पालने में एक छोटा लड़का लेटा था.

इससे उन्हें इतनी ख़ुशी हुई जो शब्दों में बयां नहीं की जा सकती! अब उनका एक बेटा था और वे उसे टेलीसिक - यानि छोटी छड़ी बुलाते थे.

टेलीसिक - छोटी छड़ी बड़ी तेज़ी से बढ़ा और वो देखने में इतना सुंदर था कि बूढ़ा आदमी और बूढ़ी औरत कोशिश करने के बाद भी उससे अपनी नज़रें नहीं हटा पाते थे.

एक दिन, जब टेलीसिक बड़ा हो गया, तो उसने बूढ़े आदमी से कहा:

"पिताजी, मेरे लिए सोने की नाव और चांदी का चप्पू बना दें. उनसे मैं मछलियां पकडूंगा और आप दोनों को खिलाऊंगा."

फिर बूढ़े आदमी ने उसके लिए एक सोने की नाव और एक चांदी की चप्पू बनाया. फिर नाव को पानी में उतारा. उसके बाद टेलीसिक नाव चलाने और मछलियां पकड़ने लगा.

वो अपना अधिकांश समय पानी पर बिताता था. वो जो मछलियां पकड़ता उन्हें बूढ़े आदमी और बूढ़ी औरत को आकर दे देता था. उसके बाद फिर वो फिर से नाव चलाने लगता था. बुढ़िया उसके लिये नाव में ही खाने का भोजन लेकर आती थी.

बुढ़िया ने कहा:

"टेलीसिक, तुम एक बाद याद रखना. तुम केवल तभी किनारे पर आना जब मैं तुम्हें बुलाऊं. यदि तुम किसी अजनबी को पुकारते हुए सुनो तो तुम अपनी नाव चलाकर उसे और दूर ले जाना!"

एक दिन बुढ़िया ने टेलीसिक के लिए कुछ खाना बनाया. फिर वो नदी के किनारे आई और उसने पुकारा:

"टेलेसिक - छोटी छड़ी,
आओ और जल्दी करो!
मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना लाई हूं ,
और पीने के लिए कुछ पानी भी!“

टेलीसिक ने बुढ़िया की बात सुनी और चिल्लाया:

"चलो, सुनहरी नाव,
चांदी के चप्पू, नाव चलाओ,
मां किनारे पर मेरा इंतज़ार कर रही है!“

फिर वो किनारे पर आया. उसने खाया-पिया और फिर से अपनी नाव को चांदी के चप्पू से धक्का देकर मछली पकड़ने के लिए फिर से निकल पड़ा.

लेकिन एक सांप ने बुढ़िया को टेलीसिक को पुकारते हुए सुन लिया. सांप रेंगकर किनारे पर आया और उसने अपनी कठोर आवाज़ में पुकारा:

"टेलेसिक - छोटी छड़ी,
आओ और जल्दी करो!
मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना लाई हूं ,
और पीने के लिए कुछ पानी भी!“

लेकिन टेलीसिक को धोखा देना आसान नहीं था.

"यह मेरी मां की आवाज नहीं है!" उसने खुद से कहा और फिर वो जोर से चिल्लाया:

"चलो, सुनहरी नाव, चलो
चांदी के चप्पू,
मुझे किनारे से और दूर ले चलो!“

उसने अपना पतवार घुमाई और नाव किनारे से दूर चल पड़ी. सांप कुछ देर तक किनारे पर इंतजार करता रहा और फिर वो रेंग कर चला गया.

थोड़ी देर के बाद टेलीसिक की मां उसके लिए कुछ खाना बनाया. मां नदी के किनारे गई और उसने पुकारा:

"टेलेसिक - छोटी छड़ी,
आओ और जल्दी करो!
मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना लाई हूं ,
और पीने के लिए कुछ पानी भी!“

टेलीसिक ने अपनी मां की बात सुनी और वो चिल्लाया:

"चलो, सुनहरी नाव,
चांदी के चप्पू, नाव चलाओ,
मां किनारे पर मेरा इंतज़ार कर रही है!“

फिर वो किनारे पर आया, उसने खाया-पिया, अपनी मां को पकड़ी हुई मछलियां दीं और फिर से निकल पड़ा.

उसके बाद सांप रेंगकर किनारे पर आया और वो अपनी कर्कश आवाज़ में चिल्लाया:

"टेलेसिक - छोटी छड़ी,
आओ और जल्दी करो!
मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना लाई हूं ,
और पीने के लिए कुछ पानी भी!“

लेकिन टेलीसिक को पता था कि उसकी मां उसे नहीं बुला रही थी और फिर उसने अपने चप्पू को और जोर से चलाना शुरू कर दिया.

"चलो, सुनहरी नाव, चलो
चांदी के चप्पू,
मुझे किनारे से और दूर ले चलो!“

वो चिल्लाया.

नाव चली गई. फिर सांप, को लगा कि वो टेल्सिक को धोखा नहीं दे पाएगा. इसलिए वो नदी छोड़कर लोहार के पास गया.

"लोहार, लोहार!" सांप रोया. "मेरे लिए एक नया गला बनाओ. मैं चाहता हूं कि मेरा गला टेलीसिक की मां जितना पतला हो."

लोहार ने वैसा ही किया, और फिर सांप पुकारता हुआ नदी की ओर वापस चला:

"टेलेसिक - छोटी छड़ी,
आओ और जल्दी करो!
मैं तुम्हारे लिए कुछ खाना लाई हूं ,
और पीने के लिए कुछ पानी भी!"

टेलीसिक ने सोचा कि वो ज़रूर उसकी मां ही होगी जो उसे बुला रही होगी और वो चिल्लाया:

"चलो, सुनहरी नाव,
चांदी के चप्पू, नाव चलाओ,
मां किनारे पर मेरा इंतज़ार कर रही है!"

टेलीसिक किनारे की ओर आया. फिर सांप ने उसे पकड़ लिया और वो उसे अपने घर ले गया.

"ओलेन्का, छोटे सांप! दरवाजा खोलो," सांप चिल्लाया.

ओलेन्का ने दरवाजा खोला और सांप अंदर आ गया.

"ओलेन्का, छोटे सांप, भट्टी को गर्म करो, उसे इतना गर्म करो कि उसकी ईंटें दमकने लगें, और फिर मेरे लिए टेलीसिक को भूनो," सांप ने कहा. "तब तक मैं कुछ मेहमानों को बुलाने जा रहा हूं और फिर हम दावत करेंगे."

और फिर सांप मेहमानों को बुलाने के लिए जल्दी से चला गया.

ओलेन्का ने ओवन जलाया, उसे इतना गर्म कर दिया कि वो लाल दमकने लगा. ओलेन्का ने कहा:

"इस कुदाल पर चढ़ो, टेलीसिक."

"मुझे कुदाल पर चढ़ना नहीं आता है," टेलीसिक ने कहा, "तुम मुझे वो करके दिखाओ."

"आओ, पहले, इस पर बैठो!"

टेलीसिक ने कुदाल पर अपना हाथ रख दिया.

"इस तरह?" उसने पूछा.

"नहीं! क्या तुमने मेरी बात नहीं सुनी? तुम्हें इस पर बैठना होगा!"

टेलीसिक ने अपना सिर कुदाल पर रख दिया.

"इस तरह?" टेलीसिक ने फिर से पूछा.

"नहीं! तुमने मेरी बात सुनी नहीं? तुम्हें उसपर बैठना होगा."

"ऐसे?" और फिर टेलीसिक ने अपना पैर कुदाल पर रख दिया.

"इस तरह नहीं मूर्ख!"

"ठीक है, फिर, मुझे उसे करना दिखाओ?"

क्योंकि वहां कोई मदद के लिए नहीं था, इसलिए छोटा सांप कुदाल पर खुद चढ़ गया. फिर टेलीसिक ने छोटे सांप को पकड़ लिया, और उसे ओवन में धकेलकर, भट्टी का दरवाज़ा बंद कर दिया. फिर टेलीसिक झोपड़ी से बाहर निकला, और एक ऊंचे गूलर के पेड़ पर चढ़ गया और इंतज़ार करने लगा.

कुछ समय बीता और फिर सांप और उसके मेहमान ड्रेगन उड़ते हुए आए.

"ओलेन्का, छोटे सांप, दरवाज़ा खोलो!" सांप चिल्लाया.

दरवाज़ा बंद ही रहा.

"ओलेन्का, छोटे सांप, तुम कहां हो? दरवाज़ा खोलो!" सांप फिर से चिल्लाया.

लेकिन ओलेन्का ने कोई जवाब नहीं दिया.

"उस बच्चे पर लानत! वो अवश्य ही कहीं चला गया होगा!" सांप चिल्लाया.

फिर सांप ने खुद दरवाज़ा खोला, वो अपने मेहमानों को अंदर लाया और उसने उन्हें मेज़ पर बैठाया. फिर उसने पके मांस को ओवन से बाहर निकाला और, यह सोचकर कि वो टेलीसिक है, वो और उसके मेहमान उसे खाने लगे. उन्होंने भरपेट खाना खाया, बाहर आंगन में गए और घास पर लेट गए.

"हम घास पर लेटेंगे और घास पर लोटेंगे, क्योंकि हमने छोटे टेलीसिक का अच्छा भोजन खाया है!" वे चिल्लाए.

फिर टेलीसिक ने पेड़ के ऊपर से पुकारा:

"हां, घास पर लेटो, घास पर लोटो, क्योंकि तुमने छोटे ओलेन्का का अच्छा भोजन खाया है!"

उन्होंने टेलीसिक को सुना, परन्तु उन्हें यह समझ नहीं आया कि वो कौन बुला रहा था. वे फिर से चिल्लाये:

"हम घास पर लेटेंगे और घास पर लोटेंगे, क्योंकि हमने छोटे टेलीसिक का अच्छा भोजन खाया है!" वे चिल्लाए.

और टेलीसिक ने पेड़ के ऊपर से एक बार फिर पुकारा:

"हां, घास पर लेटो, घास पर लोटो, क्योंकि तुमने छोटे ओलेन्का का अच्छा भोजन खाया है!"

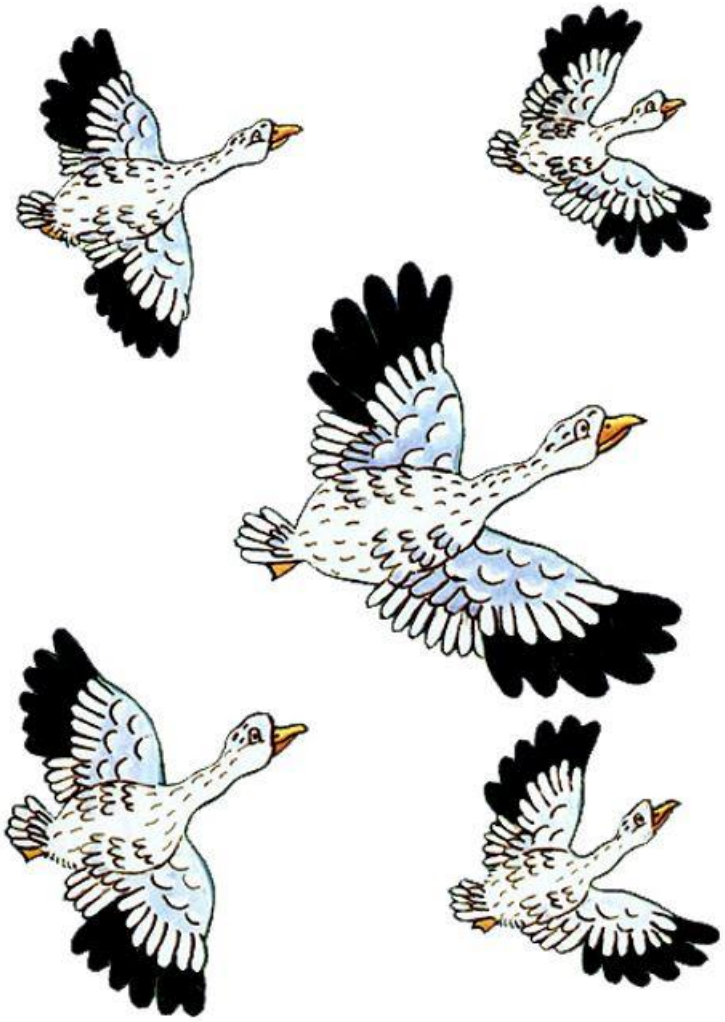

अब, इस बार वे रुके और सोचने लगे कि आखिर उन्हें कौन बुला रहा था. उन्होंने चारों ओर देखा, और फिर गूलर के पेड़ की चोटी पर उन्होंने टेलीसिक को देखा. फिर वे पेड़ के पास पहुंचे और उन्होंने उसे चबाना शुरू कर दिया. वे चबाते रहे और वे तब तक चबाते रहे जब तक उनके दांत टूट नहीं गए, परन्तु फिर भी वे पेड़ को चबा नहीं पाए. फिर वे दौड़कर लोहार के पास गए और बोले:

"लोहार, लोहार, हमारे दांत इतने मजबूत बनाओ कि हम गूलर के पेड़ को चबा सकें!"

लोहार ने उनके लिए लोहे के दांत बनाए और उन्होंने फिर से पेड़ को चबाया. वे उसे लगभग चबाना ख़त्म करने वाले थे कि अचानक हंसों के झुंड वहां उड़ता हुआ आया. उन्हें देखकर टेलीसिक ने उनसे कहा:

"छोटे हंसों, मेरी विनती सुनो,
छोटे हंसों, मुझे मेरे लोगों के पास ले चलो!
दरवाजे पर सब लोग हमसे मिलेंगे,
वे हमें दावत देंगे;
फिर हम खायेंगे-पियेंगे
और पूरी रात नाचेंगे!“

और हंस ने जवाब दिया:
"जो हंस हमारे पीछे उड़ रहे हैं वो आपकी मदद करेंगे!"

ड्रेगन ने फिर से पेड़ को कुतरने लगे, तभी अचानक हंसों के एक और झुंड उड़कर आया.

टेलीसिक ने उन्हें देखा और बुलाया:

"छोटे हंसों, मेरी विनती सुनो,
छोटे हंसों, मुझे मेरे लोगों के पास ले चलो!
दरवाजे पर सब लोग हमसे मिलेंगे,
वे हमें दावत देंगे;
फिर हम खायेंगे-पियेंगे
और पूरी रात नाचेंगे!“

लेकिन उन हंसों ने वापस जवाब दिया:

"जो हंस हमारे पीछे उड़ रहे हैं वो आपकी मदद करेंगे!"

उस समय तक गूलर का पेड़ पूरी तरह से चबाया जा चुका था और वह चरमराने और हिलने लगा था. ड्रेगन आराम करने के लिए कुछ देर रुकते और फिर पेड़ को चबाते, और ऐसा एक बार, दो बार और तीन बार हुआ.

अचानक हंसों के तीसरा झुंड वहां उड़ते हुए आया .

टेलीसिक ने उन्हें देखा और उनसे कहा:

"छोटे हंसों, मेरी विनती सुनो,
छोटे हंसों, मुझे मेरे लोगों के पास ले चलो!
दरवाजे पर सब लोग हमसे मिलेंगे,
वे हमें दावत देंगे;
फिर हम खायेंगे-पियेंगे
और पूरी रात नाचेंगे!"

लेकिन उन हंसों ने वापस जवाब दिया:

"जो हंस हमारे पीछे उड़ रहे हैं वो आपकी मदद करेंगे!" और फिर वे उड़ गए.

टेलीसिक वहीं बैठा रहा. वो वास्तव में बहुत दुखी था, क्योंकि पेड़ गिरने वाला था और उसे पता था कि वो भी पेड़ के साथ गिरेगा और फिर मारा जायेगा!

फिर अचानक एक युवा हंस उड़ता हुआ ऊपर आया. वो अन्य हंसों के पीछे छूट गया था और वो इतना थक गया था कि वो बड़ी मुश्किल से ही उड़ पा रहा था.

टेलीसिक ने उसे देखा और वो चिल्लाया:

"छोटे हंस, मेरी प्रार्थना सुनो,
मुझे ले जाओ, इस पेड़ से दूर और दूर!
छोटे हंस, मेरी विनती सुनो,
मेरे लोगों के पास मुझे ले चलो!
दरवाजे पर सब लोग हमसे मिलेंगे,
वे हमें दावत देंगे;
फिर हम खायेंगे-पियेंगे
और पूरी रात नाचेंगे!"

छोटे हंस को टेलीसिक पर दया आ गई.

"चलो, मेरी पीठ पर चढ़ जाओ!" वो चिल्लाया, और उसने टेलीसिक को अपनी पीठ पर चढ़ने और उड़ने में मदद की.

बेचारा छोटे हंस इतना थक गया था कि वो बहुत नीचे ही उड़ सका. ड्रेगन ने उसका पीछा किया और टेलीसिक को पकड़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन तमाम कोशिशों के बावजूद वो टेलीसिक को पकड़ नहीं सके और अंत में उन्होंने हार मान ली.

हंस, टेलीसिक को घर ले आया. उसने घर के किनारे एक बेंच पर टेलीसिक को लिटा दिया और फिर वो आंगन में चलने लगा और घास चुनने लगा.

टेलीसिक बेंच पर बैठ गया और झोपड़ी में जो बातचीत चल रही थी वो उसने सुनी.

बुढ़िया उस समय एक केक पका रही थी. उसने केक को ओवन से बाहर निकाला और कहा:

"यह रहा तुम्हारे लिए एक केक, बूढ़े आदमी, और यह रहा मेरे लिए एक केक!"

और टेलीसिक ने वहीं बेंच पर बैठे हुए कहा:

"मां, पर मेरा केक कहां है?"

बुढ़िया ने ओवन से कुछ और केक निकाले और फिर कहा:

"यह तुम्हारे लिए केक है, बूढ़े आदमी, और यह मेरे लिए एक केक है!“

टेलीसिक फिर से चिल्लाया :

"मां, पर मेरा केक कहां है?"

फिर बूढ़े आदमी और बूढ़ी औरत रुके और वे सुनने लगे.

"क्या तुमने अभी-अभी किसी को मुझे बुलाते हुए नहीं सुना?" बुढ़िया ने पूछा.

बूढ़े ने कहा, "तुम्हें ही ऐसा ही लग रहा होगा, मैंने तो कुछ भी नहीं सुना."

बुढ़िया ने ओवन से कुछ और केक निकाले और फिर कहा:

"यह तुम्हारे लिए केक है, बूढ़े आदमी, और यह मेरे लिए एक केक है!"

"क्या तुम मुझे एक भी केक देना नहीं चाहती हो, मां?" टेलीसिक ने फिर से कहा.

"तुम जो चाहे कहो, लेकिन मैंने सुना है कि कोई मुझे बुला रहा है!" बुढ़िया ने कहा.

फिर बुढ़िया ने खिड़की से बाहर देखा, और टेलीसिक वहां बेंच पर बैठा था!

बूढ़ा आदमी और बूढ़ी औरत तुरंत झोंपड़ी से बाहर निकले और वो टेलीसिक को उठाकर अंदर लाए. वे बेहद खुश हुए!

हंस अभी भी आंगन में ही था. जब बुढ़िया ने उसे देखा तब उसने कहा:

"वहां आंगन में एक युवा हंस है. मैं जाकर उसे पकड़ लूंगी और खाने के लिए उसे भूनूंगी."

"मां ऐसा बिल्कुल मत करना!" टेलीसिक चिल्लाया. "मारने की बजाए कृपा करके उसे कुछ खिलाओ. यदि वो हंस न होता तो मैं आज आपके पास जिंदा नहीं होता."

फिर उन्होंने हंस को चारा खिलाया और उसे पानी पिलाया, और उन्होंने बरामदे में कुछ बाजरा रखा ताकि वो बाद में भी उसे खा सके. पेट भर खाना खाकर हंस को अपने शरीर में ताकत महसूस हुई और फिर वो उड़ गया.

अंत